पाठ 2. नन्हे बने महान

पाठ का परिचय

नन्हे जब छोटा था तभी उसके पिता की मृत्यु हो गई। वह अपने मौसा के यहाँ रहने लगा था। एक बार वह फूल तोड़ते हुए पकड़ा गया। माली ने उसे मारना शुरू किया तो नन्हे बोला कि मैं बिना बाप का बच्चा हूँ न, इसलिए आप मुझे मार रहे हैं। तब माली ने उससे कहा कि यदि तुम्हारे पिता नहीं हैं तो तुम्हें और अधिक ज़िम्मेदारी से काम करना चाहिए, अपनी माँ के लिए। यह नन्हे और कोई नहीं लालबहादुर शास्त्री थे। वे बचपन से ही गुणी थे। उन्होंने बचपन से ही अपने स्वाभिमानी तथा कर्मठ होने का उदाहरण दे दिया था। एक बार पैसे न होने पर उन्होंने तैरकर नदी पार की। उनका यह सोचना था कि मल्लाह भी तो गरीब है। उसकी नाव पर मुफ़्त में क्यों सफ़र किया जाए। जब जलियाँवाला बाग में जघन्य हत्याकांड हुआ तब उसके बारे में सुनकर उनका दिल काँप उठा और उन्होंने देश को स्वतंत्र कराने की लड़ाई में अपना पूरा ध्यान लगा दिया। 16-17 साल की उम्र में लालबहादुर पहली बार स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ते हुए जेल गए।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

जीवन में आने वाली परेशानियों से घबराना नहीं चाहिए। जो लोग आत्मसम्मान के साथ जीना सीख जाते हैं वे निश्चित ही ऊँचे लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं। सिर्फ़ अपने लिए तो सभी जी लेते हैं लेकिन जो दूसरों के लिए जीते हैं वे ही सच्चे सपूत कहलाते हैं।

पाठ का वाचन

दिए गए पाठ का वाचन शुद्ध उच्चारणसहित करें। बच्चों से बीच-बीच में प्रश्न करें। बच्चों का ध्यान कठिन शब्दों की ओर दिलाएँ। उन्हें कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। आवश्यक पंक्तियों का आशय स्पष्ट करें। प्रत्येक बच्चे से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ। उच्चारण की शुद्धता पर ध्यान दें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा करें –

- आत्मसम्मान से जीना क्यों आवश्यक है?
- अपने-आप को श्रेष्ठ बनाने के लिए हमें क्या करना होगा?
- हमारे देश में हुए महान लोगों में से बच्चों को सबसे अधिक किसने प्रभावित किया है?
- लालबहादुर शास्त्री का जीवन परेशानियों में होने पर भी उन्होंने अपने निश्चित लक्ष्य को किस प्रकार प्राप्त कर लिया?
- तुम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्या संघर्ष करने को तैयार हो?